INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

65	आतंकवाद : समस्या तथा नियंत्रण	संदीप गोरे	261
66	समकालीन हिंदी कविता में स्त्री संवेदना	संतोष नागरे	265
67	हिंदी लेखिकाओ के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श	डॉ. सुनिल डहाले	271
68	कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में दलित नारी जीवन	डॉ. रजनी शिखरे, अशोक उघडे	275
69	विनय मिश्र की ग़ज़लो में बाजारवाद	डॉ. रजनी शिखरे	278
70	वाहरू सोनवणे की कवितांएँ ('पहाड हिलने लगा है' के संदर्भ में)	संतोष नागरे	281
	मराठी विभाग		
71	पर्यावरण प्रशासन : काळाची गरज	डॉ. व्ही. पी. सांडूर	287
72	भारतीय लोकशाही मधील 'भ्रष्ट्राचार' एक प्रबळ समस्या	डॉ. अंकुशराव चव्हाण	290
73	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	भाग्यश्री पानढवळे	293
74	बीड जिल्ह्यातील इमारत बांधकाम कामगारांच्या आर्थिक स्थितीचा अभ्यास	एस. ई. भोसले	298
75	नक्षलवाद एक सामाजिक समस्या : सामाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. दत्तात्रय भूताळे	304
76	शेतकरी आत्महत्या भारतीय समाजासमोरील अव्हान व उपाय योजना	टी. एस. बिडवे	308
77	नक्षलवादी चळवळीची विचारसरणी	डॉ. रजनी बोरोळे	312
78	भारतीय राजकारण आणि धर्म, जात, भाषा	डॉ. देविदास नरवाडे	318
79	मॉब लिचींग : एक गंभीर समस्या	डी.एन. रिठे	321
80	भ्रष्ट्राचार : एक विवेचन	डॉ. डी.के. ढास	325
81	दहशतवाद	डॉ. बी.एस.चव्हाण	330
82	मानसशास्त्र आणि दहशतवाद : एक आकलन	डॉ. अतुल पवार	335
83	भ्रष्टाचार : कारणे व उपाय	डॉ. भगवान वाघमारे	338
84	नक्षलवाद : भारतातील कडव्या साम्यवादी संघटनांची सशस्त्र चळवळ	डॉ. भारत बिचितकर	342
85	मराठवाड्यातील सिमांत शेतकऱ्यांच्या समस्या आणि त्यावरील उपाय	गोविंद काळे व दीपक भारती	347
86	शेतकरी आत्महत्या : कारणे आणि उपाय	डॉ. दत्तात्रय डुंबरे	350
87	नक्षलवादी चळवळीची विचारधारा आणि व्यवहार	डॉ. एस. पी. घायाळ	353
88	मराठी कादंबरी आणि अर्थकारण : विशेष संदर्भ 'फेसाटी'	डॉ. गोविंद काळे	359
89	सामुहिक हिंसाचार	डॉ. विठ्ठल जाधव	363
90	ब्रिटिशांच्या कायद्याचा भारतीय समाजावर झालेला परिणाम	सचिन पांडव, डॉ. लक्ष्मीकांत जिरेवाड	368
91	वनतोडीमुळे उदभवणाऱ्या समस्यांचे अध्ययन (संदर्भ : पवन तालुक्यातील मिन्सी या गावातील कुटुंब)	ज्योती नाकतोडे	373
92	पर्यावरणविषयक मुद्दा	डॉ. काकासाहेब पोफळे	389
93	स्वयंसहाय्यता गट आणि सशक्तीकरण : एक अवलोकन	डॉ.संतोष काकडे	383
94	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या	डॉ.काशिनाथ पल्लेवाड (सावळीकर)	387
95	सामाजिक समस्या आणि नव्वदोत्तरी मराठी कविता	डॉ. समिता जाधव	390
96	भारतातील दारिद्र्य	डॉ. शिवाजी पाते	395
97	जेष्ट नागरिकांच्या समस्यांचे सामाजिक निराकरण	डॉ. सुधीर येवले	400
98	भ्रष्टाचार : भारतीय समाजासमोरील एक ज्वलंत समस्या	डॉ. सुनंदा आहेर	404
99	पर्यावरण आणि भारतीय शेती	डॉ. योगेश पाटील	409
100	समकालीन राजकीय परिस्थिती आणि विरोधी पक्षाची भूमिका	डॉ. भुजंग पाटील	412

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

कौसल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में दलित नारी जीवन

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ अट्टल महाविद्यालय,गेवराई, जि.बीड

अशोक उघडे
सहायक प्राध्यापक- हिंदी विभाग
आदर्श महाविद्यालय, विटा तह. खानापुर
जि.सांगली

'दोहरा अभिशाप' मराठी भाषी साहित्यकार कौसल्या बैसंत्री जी व्दारा हिंदी में लिखी हुई प्रथम महिला दलित आत्मकथा हैं जो परमेश्वरी प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई है। अपने समाज में दलित नारी होने की पीड़ा का भोगा हुआ यथार्थ इस आत्मकथा में देखने को मिलता है। 'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा में वर्णित सामाजिक, सांस्कृतिक और दलित चेतना संबंधी राजनीतिक परिवेश ने उसे प्रामाणिक बनाने में सहायता की हैं। 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में कौसल्या बैसंत्री का मूल दर्द या वेदना दलित की और ऊपर से नारी होना है। इन दोनों को आधार बनाकर प्रस्तुत आत्मकथा को 'दोहरा अभिशाप' शीर्षक दिया हैं। प्रस्तुत आत्मकथा में दलित समाज का चित्रण संवेदनात्मक रुप से किया है। दलित समाज के रीतिरिवाज, छुआछूत, खानपान आदि सभी बातों का यथार्थ चित्रण इसमें देखने को मिलता है। साथ ही दलित समाज में प्रचलित धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक मान्यताओं का भी चित्रण किया हैं। उनकी आत्मकथा सामाजिक चेतना, भावनिक संवेदना और इंसानी जटिल प्रवृतियों की अभिव्यक्तियों का दस्तावेज मात्र है।

कौसल्या बैसंत्री एक सामाजिक कार्यकर्ती और श्रेष्ठ लेखिका भी हैं। उन्होंने अपने तथा अपने परिवार के साथ घटित प्रसंगों का सजीव चित्रण यहाँ प्रस्तुत किया हैं। 'दोहरे अभिशाप' से परेशान हुई लेखिका अपने संघर्षशील जीवन को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहती हैं। इनके माता-पिता की पारिवारीक स्थिति अच्छी नहीं हैं। उनके पिताजी नागपुर में एम्सेस मशीनों में तेल उालने का तो माताजी धागा बनानेवाले विभाग में काम करते हुऐ अपने संसार का जीवनयापन करते थे। उन्हें सारी लडकियाँ ही हुई, लडका नहीं हुआ। इसी वजह से वह हमेशा नाराज रहती थी। घर का पूरा वातावरण ही वैसा था। वह मन ही मन अपने आपको कोसती है और स्वयं भगवान से कहती है की हे भगवान मैनें ऐसा कौन सा पाप किया जो मेरे नसीब में सह सब लडकियाँ दी हैं। आज संसार में देखा जाए तो सभी को लडके की चाह होती है, इनकी भी थी। इसका कारण अज्ञान, स्त्री पुरुष समानता का अभाव तथा अपने वंश को आगे बढाने के लिए कुलदीपक के रुप मे लडका होने की अभिलाषा अन्य नारियों के समान इनकी भी थी।

पाँच बेटियों के पश्चात लड़का हुआ। लेकिन वर्ष के भीतर वह गुजर गया। इसीलिए वह हमेशा नाराज ही रहती थी। आत्मकथा में बैसंत्री जी ने बताया कि उनकी दादी बालविधवा है। दलित समाज में पुनर्विवाह प्रथा होने की वजह से दादी की दोबारा शादी की जाती है। उसके पति मोडूकजी पहले से ही विवाहित है। उनकी पहली पत्नी भी जीवित है। मोडूकजी दिखने में सुंदर नहीं है लेकिन दादी बहुत ही सुंदर है। उनकी पहली पत्नी भी सुंदर है लेकिन वह स्वयं खुबसूरत न होने की वजह से दोनों पत्नियों को पिटते हैं। एक दिन दादी अपने पति के डर से उसको छोडकर नागपुर जाने का निर्णय लेती है। एक रात वह बिना किसी को बताए अपने बच्चे श्रावण, सरस्वती और भागेरथी को लेकर घर से निकल पडती है। भागेरथी यह लेखिका कौसल्या बैसंत्री की माँ है। रास्ते में पैदल चलते हुए रात में ही उनकी बेटी सरस्वती की मृत्यु होती है। लेकिन दादी हार नहीं मानती। अपने बेटे श्रावण के माध्यम से बेटी को रास्ते में ही दफनाती है और आगे निकलती है। दादी नागपुर पहुँचती है। वह स्वाभिमानी और स्वावलंबी होने की वजह से किसी की सहायता नहीं लेती। वह रहने के लिए स्वतंत्र कमरा लेकर अपने बेटों को पाल पोसकर बड़ा करती है। पति मोडूकजी के बुलाने पर भी वापस नहीं जाती। दादी अंतंतक किसी पर बोझ बनकर रहना नहीं चाहती। अपनी लढाई वह खुद लड़ती है। दादी इतनी स्वाभिमानी है की कफन के लिए भी किसी का अहसान नहीं लेना चाहती। वह गठरों में हमेशा कफन का

सामान रखती हैं। दादी के चरित्र के संबंध में एक कथन है- "नारी मुक्ति के खोखले नारे लगानेवाले उस अनपढ़ आजी के जीवन से सीख सकते हैं की स्वाभिमान के साथ सिर उठाकर जीना और मरना किसे कहते हैं।" इस आत्मकथा में अनपढ एवं देहाती दादी एक आदर्शवादी स्वाभिमानी एवं स्वावलंबी नारी के रुप में पाठ़कों के सामने आती हैं।

कौसल्या बैसंत्री की माँ भागेरथी भी एक सशक्त चरित्र के रुप में उभरकर सामने आती है। भागेरथी भी अशिक्षित महिला है। अपनी माँ की तरह ही स्वाभिमानी, स्वावलंबी, साहसी, संघर्षशील नारी है। इतवार के दिन अपनी बेटियों से घर का पुरा काम करवा लेती है साथ ही वह मिल में काम करती है। अशिक्षित होकर भी शिक्षा का महत्व उन दोनों माता-पिता को है इसीलिए वे बेटियों की पढ़ाई का प्रबंध करते हैं। इस दृष्टि से उनका चरित्र बड़ा ही प्रेरणादाई है। यदि हर व्यक्ति ऐसा आचरण जीवन भर करें तो शैक्षिक दृष्टि से दलित समाज में सुधार की एक जबरदस्त क्रांति लाई जा सकती है। आर्थिक अभाव उस परिवार में बहुत था क्योंकि खानेवाले ज्यादा थे और कमानेवाले सिर्फ माता-पिता ही थें। 'उसी के बारे में' स्वयं कौसल्या बैसंत्री कहती है- "बहुत प्रयत्न करने पर भी भिडे कन्या प्रशाला में फ्रिशीप नहीं मिली, फिस बारह आणे थी परंतु उस समय बारह आणे देना भी माता-पिता के लिए कठिन काम था।" इस प्रसंग से आर्थिक अभाव का पता चलता है।

लेखिका जब पढ़-लिखकर नौकरी करते हुए साहित्य - सृजन कर साहित्यकार बन जाती हैं तभी उसका आंतरजातिय विवाह देवेद्रकुमार के साथ होता हैं। वह भी उच्च शिक्षित है। भारत सरकार के उच्च पद पर सेवारत है। देवेंद्र कुमार बिहार राज्य के रहने वाले थे। लेखिका दलित याने बौध्द धर्म से प्रभावित थी। दोनों भी युवा अवस्था से समाजकार्यों के साथ जुडे थे। दोनों भी डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर के विचारों से प्रभावित थे। लेखिका तो बचपन से ही डॉ. अंबेडकर जी से प्रभावित थी क्योंकि उन्होंने नागपुर में दो-तीन बार अंबेडकरजी के भाषण सुने थे। कुछ दिनों तक दोनों की गृहस्थी अच्छी चली परंतु कुछ दिनों के बाद दोनों में वैचारीक मतभेद होने लगे। इन मतभेदों ने पारिवारिक जीवन में दरारें उत्पन्न की। जिससे उनका वैवाहिक जीवन असफल रहा। उनके असफल वैवाहिक जीवन के बारे में रजनी तिलक कहती है - "असलियत यह है की बिहार की तुलना में महाराष्ट्र ने ज्यादा तरक्की की है हर हिसाब से।" इसलिए महाराष्ट्र के युवक युवतियाँ स्त्री-पुरुष उत्तर भारत की तुलना में थोडे लचीले और स्वतंत्र स्वभाव के हैं। बिहार, उत्तरप्रदेश, राज्यस्थान और हरियाणा में सामंती मानसिकता के कारण वहाँ के लोग अधिक पुरुषवादी है।" इसी वजह से बैसंत्री और देवेद्रकुमार जी का प्रेम सफल नहीं रहा। परिणामस्वरुप दोनों एक दूसरे से अलग रहते थे। इसी कारण उनका पति पर गुस्सा निकालना स्वाभाविक भी है। बैसंत्री जी पति देवेंद्रकुमार के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहती हैं कि- "उसने मेरी इच्छा, भावना, खुशी की कभी कद्र नहीं की। बात-बात पर गाली, वह भी गंदी-गंदी, हाथ उठाना,मारना भी बहुत क्रूर तरीके से। उसे आदत थी मारने की।"

परिवार टूटने का अंतिम दौर होने की वजह से दोनों को भी अलग रहना पडा। लेखिका ने भारतीय महिला जागृति परिषद नामक महिला संघठन बनाया जिसकी वह अध्यक्ष थी। रजनी तिलक बड़े उत्साह से उनके साथ काम करती थी। भारतीय समाज में जातियता का प्रभाव सदियों से चला आ रहा है जो अभी भी देखने को मिलता है। अज्ञान के कारण ब्राह्मण को ही लोग देवता समझने लगे थे। ब्राह्मण समाज दलितों को जानवर से नीचा समझते थे। उन्हे किसी भी प्रकार का आधिकार नहीं था। धनसंचय करने का अधिकार भी दलित समाज को नहीं था। जब इन लोगो का स्वार्थ होता तो इनके सब रुप बदल जाते थे। इस संदर्भ में कौसल्या बैसंत्री कहती है- " मतलब होने पर ब्राह्मण जरुर पाँव पकडता है। तब उसकी श्रेष्ठता गायब हो जाती है। लेखिका जानती थी कि ब्राह्मणों की पोल खोलने के लिए दलित समाज को जगाने की आवश्यकता है। जब तक दलितों को उन पर हो रहे अन्याय अत्याचार का एहसास नहीं होता तब तब ब्राह्मणो से छुटकारा पाना संभव नहीं है। यह काम तो शिक्षा से ही संभव है। ब्राह्मणों से टक्कर लेने के लिए पढ़ाई लिखाई होनी चाहिए। ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जैसे डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर जी ने हासिल किया तभी वे उनसे टक्कर

लेते रहे।" डॉ. अंबेडकर जी ने शिक्षा,संगठन और संघर्ष का नारा समाज को दिया था। इसी कारण दलित समाज में आज स्वाभिमान और स्वावलंबन की भावना चरम रुप में पायी जाती है।

निष्कर्ष :-

सारांश रुप से कहा जा सकता है की कौसल्या बैसंत्री जी नें 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में दलित नारी के जीवन संघर्ष की कहानी लिखी है। जिसमें असफल प्रेमविवाह, जातिय संस्कार, छुआछूत, आर्थिक अभाव, बालविवाह, अंधश्रध्दा, रुढी, परंपरा, उच्चवर्गिय लोगों व्दारा किये जानेवाले शोषण आदि पर प्रहार किया है। बैसंत्री जी ने डॉ.अंबेडकर जी के विचारों से प्रभावित होकर छात्र संगठन में काम करना पसंद किया था। बाबासाहब के विचारों से उनमें स्वाभिमान की भावना जागृत हो चुकी थी। कौसल्या बैसंत्री एक और दलित परिवार में पैदा होने तो दूसरी और नारी होने के अभिशाप से त्रस्त है। शोषणकारी जातिव्यवस्था एवं पुरुष प्रधान व्यवस्था के इन दोहरे अभिशापों कों झेलते हुए भी अपने संघर्षपूर्ण जीवन को सफल बनानें में प्रयत्नशील रहती है।

संदर्भ ग्रथ सूची

१. दोहरा अभिशाप - कौशल्या बैसंत्री
२. दलित साहित्य अनुसंधान के आयाम - डॉ.भरत सगरे
३. समकालीन हिंदी उपन्यास वर्ण एवं संघर्ष - डॉ. जालिंदर इंगळे
४. दलित उपन्यासों में स्त्री चरित्र - डॉ. सुचिता गायकवाड
५. अंबेडकरवादी चिंतन और दलित उपन्यास - डॉ. प्रदिप सरवदे
६. दोहरा अभिशाप : एक अनुशीलन - डॉ. भिमराव पाटील